मां धूमावती की कथा PDF

एक बार सती शिव के साथ हिमालय में विचरण कर रही थीं। इसलिए उसे जोर की भूख लगी। उन्होंने शिव से कहा – 'मुझे भूख लगी है' मेरे लिए भोजन की व्यवस्था करो' शिव ने कहा – 'अभी कोई व्यवस्था नहीं हो सकती' तब सती ने कहा – 'ठीक है, मैं तुम्हें ही खाऊंगी'। और उसने शिव को ही निगल लिया। शिव स्वयं इस संसार के रचयिता, पालक हैं। लेकिन वे भी देवी की लीला में शामिल हो गए।

भगवान शिव ने उससे 'मुझे बाहर निकालने' का अनुरोध किया, इसलिए उसने उसे बाहर फेंक दिया। उसे बाहर निकालने के बाद, शिव ने उसे श्राप दिया कि 'आज से और आगे से तुम विधवा के रूप में रहोगे
तब से वह विधवा है। शापित, त्यागा हुआ, भूखा लगना और पति को निगल जाना ये सब पुराणों के प्रतीकात्मक प्रसंग हैं। यह देवी मनुष्य की इच्छाओं की प्रतीक है मनुष्य की इच्छाएं कभी समाप्त नहीं होती इसीलिए मनुष्य हमेशा अशांत रहता है मां धूमावती उन सभी कामनाओं को खाकर नष्ट देने नष्ट कर का संकेत देती है।

इन महाविद्याओं का कोई स्थायी आवाहन नहीं होता है, अर्थात इनकी स्थापना की कामना नहीं करनी चाहिए या लंबे समय तक घर में नहीं बैठना चाहिए क्योंकि ये दुख, क्लेश और दरिद्रता की देवी हैं। जाप शुरू करने से पहले आह्वान करें और समाप्त होने के बाद इसे विसर्जित कर दें।

pdfinbox.com